ISSN : 2583-2948

मैं यहीं रुक गया हूँ..!

डॉ वरप्रसाद वासाला,
हिन्दी सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
श्री राजाराजेश्वरा शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
करीमनगर, हैदराबाद
मो ० - 9490189847,
Email : varavhindiresources@gmail.com

मैं यहीं रुक गया हूँ..!

कुछ करने की आस में

दिमाग के गलियारे में घूमते घूमते

कभी रुक रुक कर

कभी थक थक कर

बार-बार लगातार

कुछ सपने संजोकर

घिस घिसकर

चूर चूर होकर

बिखरकर गिरता हूँ

कहीं रेती की तरह..!

ना जाने क्यों

पिसते आशाओं और विचारों के बीच

सुबह से शाम

रात से सुबह तक

रेंगती हुई तड़प

कहीं एक लकीर बनकर

आगे बढ़ने नहीं देता मुझे..!

लगता है दूर-दूर तक

तड़पती हुई दुख का साया

ISSN : 2583-2948

कल की चिंता को

आज की व्यथा सा बुनकर

जन्म और मरण के बीच

वहीं रुक गया हूं।।

कुल मिलाकर

एक बार फिर

उत्साह के पुनर्जन्म की आकांक्षा में

नए उमंग की खोज में

मैं यहीं रुक गया हूँ...!!